

DPN 6302

Title : अनन्त व्रत विधान ANANTA VRATA VIDHAN

Run. No. 6993

Cat. No. 1

Micro. No.

Subject किंव Riteval

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. / नेपाल भाषा / लिखित /

Size in cms. 18 x 8

Folios 33

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor श्री पूर्णानन्द / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 808, ..

Ruler / place श्री पूर्णानन्द / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Site Diagram
अनन्त व्रत विधान नक्सा चित्र ५

Material : palmleaf / paper / thya saphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

अनन्त व्रत विधान ॥ अनन्त व्रत लिखित ॥ नैमित्तिक ॥ चेतन लेखके ॥ स्वानन्द इच्छके ॥
समाप्ति / colophon - इति भाष्येनान्ते शास्त्रे अनन्त व्रत विधान समाप्तः ॥ ॥

શ્રેયો ૬ સુ સંવત ૮૦૮ કાર્તિક દુષ્ણ અષ્ટમિ સુધકાસો ॥ વ્રજકુલ ચોમ દુનકા ॥ તુંવિ
વેતા શ્રી જ્ઞાનદાસ અનન્ત પ્રત થવત ચોયા ગુણ ॥ ॥ દુષ્ણમસુ સર્વદા ॥
૧ સંવત ૮૦૬ આશ્વિની વૃષા ચતુર્દશી અંગાલક કુંભ શ્રી જ્ઞાનદાસ મુલ ગુવ દિન નિહ
દા કાદાસિકુલ ત્યક્તસિંજુ મોક દિન ગુણ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अन्नं वृत्तलिङ्गं ॥ नोसिय
 ॥ वेंगनगें वकें ॥ स्नाननकुवकें ॥ धूनकृष्णवकें ॥ स्नाननेका
 लखनअकृतवालकावआगलगयकः कुरिर्नगें ॥ जाकें स्नान
 वर्लखवजानकावगें ॥ धलमनयनामना ॥ अशादि ॥ वाक्का ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अन्नं वृत्तलिङ्गं ॥ नोसिय
 ॥ वेंगनगें वकें ॥ स्नाननकुवकें ॥ धूनकृष्णवकें ॥ स्नाननेका
 लखनअकृतवालकावआगलगयकः कुरिर्नगें ॥ जाकें स्नान
 वर्लखवजानकावगें ॥ धलमनयनामना ॥ अशादि ॥ वाक्का ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अन्नं वृत्तलिङ्गं ॥ नोसिय
 ॥ वेंगनगें वकें ॥ स्नाननकुवकें ॥ धूनकृष्णवकें ॥ स्नाननेका
 लखनअकृतवालकावआगलगयकः कुरिर्नगें ॥ जाकें स्नान
 वर्लखवजानकावगें ॥ धलमनयनामना ॥ अशादि ॥ वाक्का ॥

ललकामलार्थं अन्नं वृत्तनिमित्तार्थं ॐ दमर्यगुलालसादा
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अन्नं वृत्तलिङ्गं ॥ नोसिय
 ॥ वेंगनगें वकें ॥ स्नाननकुवकें ॥ धूनकृष्णवकें ॥ स्नाननेका
 लखनअकृतवालकावआगलगयकः कुरिर्नगें ॥ जाकें स्नान
 वर्लखवजानकावगें ॥ धलमनयनामना ॥ अशादि ॥ वाक्का ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अन्नं वृत्तलिङ्गं ॥ नोसिय
 ॥ वेंगनगें वकें ॥ स्नाननकुवकें ॥ धूनकृष्णवकें ॥ स्नाननेका
 लखनअकृतवालकावआगलगयकः कुरिर्नगें ॥ जाकें स्नान
 वर्लखवजानकावगें ॥ धलमनयनामना ॥ अशादि ॥ वाक्का ॥

नयु नूनमस्तु ॥ अथ शुभं लला कालि ॥ ॥ न्यासाय या उचः
जा ॥ थमलं खनहाय ॥ यत न गेय ॥ स्नान न कृ य ॥ ॥ स्नान न न
क ॥ दा ना वृत्ति ॥ ॐ न त्वा यामि ॥ ॐ दे व स्य त्वा ॥ ॐ त्वमग्ने हरि ॥ ॐ
श या अ स्नान ॥ ॐ य स्य कूर् म्भा ॥ ॐ य द क्री द ॥ ॐ य ज्ञान ने ॥ ॐ स्थान
पृ थिवि ॥ ॐ य गे य न्ता ॥ ॐ अ मि त्ते ॥ ॐ दा या दे वा ॥ ॐ व त्वा नि ॥ ॐ
यु ज्ज गे ॥ ॐ ॐ दे वि ष्णु ॥ ॐ अग्नि मा ठा ॥ ॐ ॐ वे त्वा ॥ ॐ अग्ने ज्ञा या ॥

ॐ ज्ञाना देवी ॥ ॐ उ य रु वे ॥ ॐ न दी ह्य ॥ ॐ ग ल्प नां त्वा ॥ ॐ वृ ह स्प ते ॥
 ॐ या व का ना ॥ ॐ शी श्व ते ॥ ॐ अस्मा क सि न्धु ॥ ॐ न मा व रु श्वा य ॥ ॐ म फ य
 ऊ नि ॥ ॐ अ सो ऊ स्ता मि ॥ ॐ ति सु म रु न द्रा वा र्चि ना ॥ ॥ ग ना वि से व
 वे द ॥ ॐ अ न ना य त म ॥ ॐ अ र्ग न क नू न सि धि व्क वं त्वा मा म स्य ग नू
 न सि धि व्क वं त्वा ति र थ ना ति श्र म सि धि व्क वं त्वा ॥ ॐ ना य त्वा मा म
 रु त वि व्क वं त्वा ग्न ये या य स्या व द वि व्क वं त्वा ॥ १ ॥ ॐ क यि ला य न

म॥ ॐ नालगावाजितिकलादिव० उडाउ यजिता। तेषां ५ सह
मुयाउ नव धनानि तन्मसि॥ २॥ ॐ लयाय नमः॥ ॐ उड लीजान
वे॥ ३॥ ॐ सुं कर्षलाय नमः॥ ॐ विजाजा॥ ४॥ ॐ रुयाय नमः॥
॥ ॐ हाये दाष्टा हाये यराया अरुन धं पुष्ट विष्ट पाया रिष काय
वहि षाय ना काय त्रि यं हाय देव लाकाय यजिताय मन्त्र लाका
यय कत्रिताय ० सर्वे लाके ४ उष सका नमः महे वधाय मन्त्रि

तावम धावा सयल्लू लीय कामानयि जीम्॥ ५॥ ॐ मलिरु वलाय नमः
॥ ॐ जर्म लाहुरि यं उवाया अष्टो लया ली वाया विया लगे उः
सुं यालं मिनाये की ना सुं की लाय सुना काली रुडा य गृह य ० रथय
सुविर्ग धमा धु हाया न रुत्तय ॥ ६॥ ॐ लाल यानय नमः॥ ॐ जीलिय
दा॥ ७॥ ॐ वल रुडा यनमः॥ ॐ गुयं वरं य जा॥ ८॥ ॐ शुच धायाय
नमः॥ ॐ गदे वाजिरु वादि लरु द वायु रुद्र वनु मा ॥ गदे वः

शुद्धं वक्रताश्रयस्य ज्ञायति ॥ १० ॥ ॐ लोकां लोकां लोकां नमः ॥ ॐ आः
रुद्र ॥ ११ ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
तानियस्य ॥ १२ ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
रुद्रा नमः ॥ १३ ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
रुद्रा नमः ॥ १४ ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
रुद्रा नमः ॥ १५ ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥

विश्वामाह वरुणस्य मतिविश्वरुद्रा ॥ जामस्य कर्तुर्गुड ॥ यथा ना
२ सुद्रु मेधायाय यसामर्ह गाम् ॥ १६ ॥ ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥
ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥ ॐ रुद्रा नमः ॥

माञ्जुस्त्रादिष्टावृत्तमिति गोयुक्तेन वनेन ॥ अस्मिन्मन्त्रे न समयावि
ष्टकञ्चाद्रूपं गानिविवन्धनामि ॥ ॐ श्रिय नमः ॥ ॐ श्री श्रुते ॥
ॐ स नमः ॥ ॐ यावका नमः ॥ ॐ गत्रु जये नमः ॥ ॐ सुय
ल्लुसि गत्रुत्तामि वृत्ते जिया गाय गत्रुत्तु वृत्ते उथ नमः यको ॥
स्त्रामा अस्मा कदा ॥ ॐ गानिय रु ॥ विना सामने ननु वीम दयै य
द्वाय द्वियै य क विष्णु ॥ ॐ हस्तस्य ल्लुसि गत्रुत्तामि वृत्ते गत्रुत्तु

यतः ॥ ॐ कत्रुत्तु ॥ ॐ अजिष्ट कलर्मे ॥ ॐ अनक कत्रुत्तु ॥
ॐ द्विष्टु न वाटम ॥ ॐ सत्रुत्तु ॥ ॐ नमामुस्यै स्त्राम ॥ ॐ वलिया ॥
ॐ नमो वरुणाया ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥
ॐ अत्रुत्तु ॥ ॐ कोमात्रुत्तु ॥ ॐ यत्रुत्तु ॥ ॐ वरुणाया ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥
ॐ यात्रुत्तु ॥ ॐ अत्रुत्तु ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥ ॐ गत्रुत्तु ॥
ॐ अत्रुत्तु ॥ ॐ अत्रुत्तु ॥ ॐ अत्रुत्तु ॥ ॐ अत्रुत्तु ॥ ॐ अत्रुत्तु ॥

कावे श्वेनमशा आवाहनादि एवम्मुखा ॥ गे नार्थया गाद केन
सर्वानुवर्तिनसि श्रुय ॥ ॐ उक्तं नित्यं यजमाना रुम्भा यद्वनवा
सिनी ॥ अक्षानि समुत्पन्ना मरुतममर्तुर्जली ॥ गिलर्क विधायः
युष्मद्भ्यः ॥ गे गोदा वरुजनी ॥ ॐ यद्वद्वानायनमशा ॐ नामुगाः
यन्नायनमशा ॐ ऊयायनमशा ॐ विजयायनमशा दानमर्था ॐ वे
कृष्णायनमशा ॥ ॐ दक्षिणदायानमशा ॐ आ यमनी न

नायनमशा ॐ वलुयानमशा ॐ यवलुयानमशा दानमर्था ॥
ॐ वराहायनमशा ॥ ॐ यस्त्रिमदायानमशा ॐ यो यगावः
नायनमशा ॐ आयेनमशा ॐ विधायेनमशा दानमर्था ॥ ॐ क
यिनायनमशा ॥ ॐ उक्तं यदायानमशा ॐ हेमगावनायनः
मशा ॐ विषकनायनमशा ॐ दैत्ययालायनमशा दानमर्था ॥
ॐ नवार्मिहायनमशा ॥ ॐ गलयनयनमशा वायव्या ॥ ॐ गुत्र

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
लाय नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
हु काय नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
य नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
य नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
वदिकाय नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

य नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
यादि ॥ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
काम्यार्थं ॥ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

यथायि वतु बुजुशदकि र्नाह कयेयरीः दद्या कं रवमधक
नो वकुमूर्ध कयेवामैः गदा देया युयत्तनशाञ्जनर्क यानसी
यनैः कथिर्गवक्र विकर्म। सनवर्षु महाकायः कीर्तीटि मुकूना
कल्ल॥ श्रीवदु कोमुरं हल्लः वनमाला विदुषिर्ग॥ अन्नकायः
नक्तृयिने यान प्रर्थनमशा॥ धर्मनी यनिरुथर्थः सान्नेयः
न प्रर्थनमशा॥ ॥ यादार्थमनु॥ ॐ आग कनक्त देवैः गं जा

जिऊ गत्यना गृहाणार्थमया दत्तः मनकायनमाप्नुता॥ ॥
स्तानमनु॥ ॐ अन्नक गुलनलायः विश्वद्वयधनाय चानमाम
हन्म देवायः अन्नकायनमानमशा॥ ॥ आवमन॥ ॐ नायायल
नमस्तुः नवकारुवनावलक्षणे लाक्यायिकानन लादिर्माम
धुसूदनशा॥ ॥ हस्तार्थमनु॥ ॐ ऊल जायम देवायः ऊलजागा
यर्गिखिने। ऊलनासिस्तुयायः हस्तार्थन ददामाह॥ ॥ दक्षः

ॐ कोऽक्षयवाससी देवः सूक्ष्माननलेयुः। यत्रिधा यय देम
मदनयदकामया॥ ॥ गगनिया कुलि॥ ॐ अननकसर्वरावानाः
मनका रुगवान्दुविः। याननकलक्षयिः समजीवेन जन्मः
नि॥ अनकायनममुख्यः नमस्तुलसायिने। धर्मार्थकाममाकाय
ः। यतीभगुयी कुलि॥ ३॥ ॥ गगनसुजनी॥ ॐ अनकायरा॥ ॐ वे
कृष्णयरा॥ ॐ वनादायरा॥ ॐ कविलायरा॥ ॐ नयमिदायरा॥ ॐ

कनकगायरा॥ ॐ गेगायरा॥ ॐ दायलयगायरा॥ ॐ कलिय
गायरा॥ ॥ ॐ नावायनो यरा॥ ॐ विष्णुवेरा॥ ॐ नामायनमशा
ॐ दामादनायरा॥ ॥ गगनसुसूक्ति सुजनी॥ ॐ अनकाय
दुवि केशमूर्कियनमशा॥ ॐ वामुदवाय वामुकी मूर्कियनमशाः
ॐ मधुसूदनायदक कसूकियनमशा॥ ॐ गिविकमायक कौटिक
मूर्कियनमशा॥ ॐ वामनाय यमसूकियनमशा॥ ॐ शोधवायमहा

यप्रमूर्खियनमः॥ॐ हौषी कंजायर्खयालमूर्खियनमः॥ॐ
यप्रनारायकलिकमूर्खियनमः॥ ॥गगावतुईजतुवनतु
ऊनी॥ॐ तुक्कलनमः॥ॐ राक्कनायनमः॥ॐ रणायायनमः॥ॐ
सर्वयायिननमः॥ॐ रूगीश्वनायनमः॥ॐ विश्वतूयायनमः॥ॐ
महीकायायनमः॥ॐ सुक्षिप्तिगिरीहात्रकर्णियनमः॥ॐ अनका
यनमः॥ॐ विष्णुर्वनमः॥ॐ यप्रनारायनमः॥ॐ कंजायायनमः॥

ॐ नवसिंहायनमः॥ॐ वामनायनमः॥ॐ शिउवनायनमः॥
गगादगावगात्रयऊनी॥ॐ अनकायमच्छमूर्खियनमः॥ॐ अनका
यकृष्णमूर्खियनमः॥ॐ अनकायवनाहमूर्खियनमः॥ॐ अनका
यनवसिंहमूर्खियनमः॥ॐ अनकायवामनमूर्खियनमः॥ॐ अनका
ययवगुनाममूर्खियनमः॥ॐ अनकायनाममूर्खियनमः॥ॐ अनका
यवृषमूर्खियनमः॥ॐ अनकायकृष्णमूर्खियनमः॥ॐ अनकाय

कल्किमूर्ति नमः ॥ ॐ मिदं जगत् ॥ ॐ कंठ वायु
 लक्ष्मी नमः ॥ ॐ नात्राय लय वागीश्वरी स नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 यकाक्षी दाक्षी नमः ॥ ॐ लम्बिनीयाय कियार्थे काक्षी नमः ॥ ॐ वि
 भूवेण्णाय नमः ॥ ॐ मधुसूदनाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
 ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कायेश्वरी नमः ॥ ॐ वामनाय नमः ॥ ॐ
 श्री नमः ॥ ॐ श्रीधराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कल्याणाय नमः ॥

माहिनाय नमः ॥ ॐ यज्ञनाथाय नमः ॥ ॐ धर्मदाय नमः ॥
 ॐ दामोदराय नमः ॥ ॐ मणिमाय नमः ॥ ॐ यत्र धामाय नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ मिदं जगत् ॥ ॐ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ यमाय नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ ॐ कुर्वेताय नमः ॥ ॐ ॐ नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

ॐ नमो देवस्तु ॥ ॥ नमो ननक कलश दूनी ॥ ॐ वृद्ध लननमः ॥
ॐ विष्णु वननमः ॥ ॐ उदायनमः ॥ ॐ सुदीप्यनमः ॥ ॐ सुदा
जिवायनमः ॥ ॐ गंगायेनमः ॥ ॐ यमुनायेनमः ॥ ॐ गंगादा
वर्धनमः ॥ ॐ सुवर्धनमः ॥ ॐ नृमदायेनमः ॥ ॐ कावली
नमः ॥ ॐ कोजियेनमः ॥ ॐ वाग्मयेनमः ॥ ॐ वामुदवायनमः
॥ ॐ मुंकरवलायनमः ॥ ॐ युद्धनायनमः ॥ ॐ अनिरुद्धायनमः ॥

ॐ अनन्तायनमः ॥ ॐ रुद्रयादि ॥ आवाहनादि ॥ ॥ नमो नन
क कलश दूनी ॥ ॐ वृद्ध लननमः ॥ ॐ विष्णु वननमः ॥ ॐ उ
दायनमः ॥ ॐ सुदीप्यनमः ॥ ॐ सुदाजिवायनमः ॥ ॐ गंगा
नायनमः ॥ ॐ रुद्रदाजायनमः ॥ ॐ विश्वामित्रायनमः ॥
ॐ समदलननमः ॥ ॐ वज्रिवायनमः ॥ ॐ कश्यपायनमः ॥
ॐ अग्नयनमः ॥ ॐ आदि त्यादिनवग्रहस्थानमः ॥ ॐ अश्वस्तु ॥

यनमः॥ॐ वनयनमः॥ॐ श्यामयनमः॥ॐ रुन्मगेनमः॥ॐ विही
षण्णयनमः॥ॐ कृपायनमः॥ॐ यनशुनामायनमः॥ॐ मार्कण्डे
यायनमः॥ॐ सूर्यकृष्णायनमः॥ॐ श्रीयायनमः॥ॐ श्रीश्रीशक्तिः
सद्दिनाय आवाहनादि॥ॐ तिमिरश्रुत्यकलना॥ ॥ गंगास
नसुतनी॥ॐ ब्रह्मनाथसकलनागवाडेस्थानमः॥ॐ कालसु
दायनमः॥ॐ कालसुदायनमः॥ॐ दधिसुदायनमः॥ॐ

गङ्गासुदायनमः॥ॐ सुवासुदायनमः॥ॐ सुकृष्णसुदायनमः
॥ॐ कृष्णसुदायनमः॥ॐ सुनाथानमः॥ॐ सुनाथ आवाह
नादि॥ ॥ गंगावल्लिखनी॥ॐ अग्निनाथसेवयायनमः॥ॐ उः
उरेववायनमः॥ॐ बलुसेववायनमः॥ॐ उन्नतसेववायनमः
॥ॐ काधसेववायनमः॥ॐ कनारिसेववायनमः॥ॐ श्रीवर्णसे
ववायनमः॥ॐ संहानसेववायनमः॥ॐ उक्तादिश्रुमा

गलेशानमः॥ॐ कुरुया लायनमः॥ॐ सुखानकुरुया लाय आः
वाहनादि॥ ॥ गंगा गलयगिरिजनी ॥ॐ गलयगिरय नमः॥ॐ
सुखामनायनमः॥ॐ गलेश्वराय नमः॥ॐ गजाननाय नमः॥ॐ
सिद्धिदाय नमः॥ॐ सिद्धिदाय नमः॥ॐ प्रकटकाय नमः॥ॐ
नमोदकाय नमः॥ॐ गंगामुनाय नमः॥ॐ हनुमताय नमः॥ॐ
हर्लीवाय नमः॥ॐ गलयगिरिनाथाय नमः॥ॐ गलयगिरिमूर्तये नमः॥

मः॥ॐ गलयगिरिमूर्तये आवाहनादि॥ ॥ गंगा कोमात्री सः
डनी ॥ॐ वाक्को नमः॥ॐ माहेश्वर्ये नमः॥ॐ कामार्थे नमः॥ॐ
वेद्ये नमः॥ॐ वाक्को नमः॥ॐ वेद्ये नमः॥ॐ वामदेव्ये नमः॥
ॐ महालक्ष्म्ये नमः॥ॐ कामात्री देव्ये नमः॥ॐ कामात्री देव्ये आः
वाहनादि॥ ॥ गंगा गवाक्षिनी ॥ॐ नन्दार्ये नमः॥ॐ रुद्रार्ये
नमः॥ॐ सुरुडार्ये नमः॥ॐ सुजीवार्ये नमः॥ॐ सुमनस्ये नमः॥

ॐ सुत्रे नमः ॥ ॐ कथिलदियञ्च (गमात् के रा) आवाहनादि ॥
 ॥ गंगा वहिष्ठा नाकादि रुजर्न ॥ ॐ वहिष्ठा नाकादि स्नान देव क
 ल देवते स्नानमः ॥ आवाहनादि ॥ ॥ श्री स्वस्त्युपेता ॥ ॐ
 श्री स्वस्त्युपेता नंदि यः गन्धार्धं सुमनाह्वयं । विलयनं सुत्रः
 रजः ॥ श्री स्वस्त्युपेता नंदि यः ॥ रुगवते अनन्ताय श्री स्वस्त्युपेता
 नन्तमः ॥ ॥ गन्धार्धं नन्त ॥ ॐ मलयावलसीरुतः सुगन्धं वसु

॥ ३
 ज्ञानं । विलयनं मया दत्तं ॥ गृहालयलमेश्वरं ॥ रुगवते
 अनन्ताय गन्धार्धं नन्तमः ॥ ॥ सिद्धुत्र ॥ ॐ राना ॥ किन्न
 वरुः ॥ सिद्धुत्रं श्रीर्वरुषर्ग । यती रुसर्वके ज्ञः यदुल्ललसि
 द्वय ॥ रुगवते अनन्ताय सिद्धुत्रं नन्तमः ॥ ॥ अक्षायवीता ॥ ॐ
 दामादन्नमस्तुः ॥ गृहालयलमेश्वरं ॥ गृहालयलमेश्वरं ॥ गृहालयलमेश्वरं
 ॥ गृहालयलमेश्वरं ॥ ॐ अक्षायवीता ॥ रुगवते अनन्ताय वसु

गाम्ना॥ कुं वक्राः ॥ सर्वथा विवसीश्वर्यं विष्णु
यमदाकारः सुखिसिंहायकायकं अनर्कं वगनाविष्णुः यमः
नारुं वक्रं शर्वं नयसिंहं यथा यश्चः दावर्नं विठुवनाविष्णुः
द्विष्टमयादरुः यन्किर्नमेवतुर्दृष्टं महासादवदं वंशः
गारुवत्वनन्कशारु गवर्नं अनन्कायवतुर्दृष्टं यन्किर्नमात्रं य
र्थनमः ॥ ॥ यमन ॥ कं दय्यरुससं जार्मः यद्विर्गुं वगर्नं

ॐ गङ्गा गी वद सी के ज्ञः कुकि मु किं वद हि मा ॥ रु गवने अ
नकाय व मन पु र्ण नमः ॥ ॥ उ व जी ॥ ॐ गी गा स्तान पु सः
तु र्णः स र्वे ती र्थ पु स तु ली वा सु दे व प्रियं नि र्णः उ व जी रु
ग्ग मा रु दा ॥ रु गवने अनकाय उ व जी य र्ण नमः ॥ ॥ दि
या से उ दि या अ रु न दि या दा रु ल ॥ ॐ अ न न र्म सा व म हा स म डे
ः स र्मा स म र्मु ४ द व वा सु दे व श अ न न र्मु ये वि नि या स सः अ न

न रु या य न भा र न म रु ॥ रु गवने अनकाय व उ र्दे ज य न्ति न रु
वी अ रु न पु र्ण नमः ॥ ॥ य म पु र्ण ॥ ॐ य म ने के न दे वे ज्ञः या
व स रु म ले रु ली व र्ण य र म रु म रुः या य म रु व र्ण रु र्ण ॥ रु
गवने अनकाय य म पु र्ण नमः ॥ ॥ नी ला तु ल ॥ ॐ नी ला तु
ल व र्ण पु र्णः पु र्ण ला म रु र्म मा रु र्म ॥ गङ्गा गी क म ला ना थ व रु
भा रु कि व रु व श ॥ रु गवने अनकाय नी ला तु र्ण नमः ॥ ॥ जा

तिष्ठति ॥ हुं महावीर्यमतायानिः कृतिष्ठति ॥ गदह्वी गवयि
यगर्वदवः गृहानेयुषाकम ॥ रुगवगे अनन्ताय कृतिष्ठति
नमः ॥ ॥ रुल ॥ हुं रुलं यविविधा कालः कदली यनसादि
कौतुं रुयगादिकर्लनीः गृहालयमन्त्रव ॥ रुगवगे अनन्ताय
रुलं नमः ॥ ॥ गामूल ॥ हुं गं गव रुषर्षः वदनाकल
रुषर्षः गृहालयमन्त्रवलाकार्नीः प्रियतामूलमन्त्रम ॥ रुगवगे अनः

नायतामूलं नमः ॥ ॥ धनिवा ॥ हुं नेवद्य गृहानन्दवः रुकि
मं लवलीकृत् ॥ हुं विनीमवर्षदहिः यत्रुवयवागर्ति ॥ रुगव
गे अनन्ताय नेवर्षनमः ॥ ॥ दियार्धन ॥ हुं वनस्य लवर्षदवः
ताना गन्धे मुस्यर्नी आहारं सर्वदेवार्नीः धूयार्थं पुनि गृह्णी
॥ रुगवगे अनन्ताय वतुर्द्विगुक्तिन धूर्यनमः ॥ ॥ दियार्ध
यिताउ ॥ हुं आश्नुवर्किर्षर्कः वक्त्रिना कृतिर्नीमया दीय

ॐ ह्रीं नमः ॥ वेला के नमना जनी ॥ रुगवर्गे अतन्का यव
तुर्दहा गतिगदियं नमः ॥ ॥ धनमाहनी रुय ॥ ॥ गग
मल्लसुसुजनी ॥ ॐ दक्षिणयाद के शानमः ॥ ॐ वामयाद के शान
नमः ॥ ॐ दक्षिणतुळ शानमः ॥ ॐ वामतुळ शानमः ॥ ॐ जीखाय
नमः ॥ ॐ यकाय नमः ॥ ॐ गदाय नमः ॥ ॐ यत्राय नमः ॥ ॐ वाः
सुदवाय नमः ॥ ॐ सिकर्षणाय नमः ॥ ॐ युष्मत्ताय नमः ॥ ॐ अ

निर्द्धाय नमः ॥ ॐ सुमनकाय नमः ॥ ॐ दीप्ताय नमः ॥ ॐ कर्क
शाय नमः ॥ ॐ कोलिल्याय नमः ॥ ॐ आमदेवाय नमः ॥ ॐ ज्ञाः
दिल्याय नमः ॥ ॐ सोमाय नमः ॥ ॐ जीगाय नमः ॥ ॐ त्रधाय न
मः ॥ ॐ वृहस्पतये नमः ॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ ॐ शनिश्चराय नमः
॥ ॐ नारदे नमः ॥ ॐ केतवे नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ अश्विन्ये न
मः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ रुद्रिकाय नमः ॥ ॐ राक्षसे नमः ॥ ॐ म

गङ्गायाय नमः ॥ उज्जयिन्याय नमः ॥ पुनर्वसुवे नमः ॥ पुष्याय
नमः ॥ अश्लेषाय नमः ॥ मघायाय नमः ॥ पूर्वाश्लेषाय नमः
॥ उरुग्राह्याय नमः ॥ चक्रायाय नमः ॥ विद्यायाय नमः ॥
स्वातीयाय नमः ॥ विशाखाय नमः ॥ अर्द्रायाय नमः ॥ ऊषायाय नमः
॥ मूलायाय नमः ॥ पुष्यायाय नमः ॥ उरुग्राह्यायाय नमः
॥ अश्लेषायाय नमः ॥ धनुरायाय नमः ॥ श्रवणायाय नमः ॥

नरुवाय नमः ॥ पुष्यायाय नमः ॥ उरुग्राह्यायाय नमः ॥
॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥ ॥ अश्लेषायाय नमः ॥
॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥
॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥
॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥
॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥ अश्लेषायाय नमः ॥

ॐ यगिया नायनमः॥ ॐ वरि या नायनमः॥ ॐ यरि द्यायनमः॥
ॐ जिवायनमः॥ ॐ सिद्धयनमः॥ ॐ सायनमः॥ ॐ शुभायनमः॥
ॐ शुद्धायनमः॥ ॐ बुद्धायनमः॥ ॐ बुद्धायनमः॥ ॐ वैश्वनाथनमः॥
ॐ सुकारिणायनमः॥ ॥ ॐ मयायनमः॥ ॐ दयायनमः॥
ॐ मिथुनायनमः॥ ॐ कर्कटायनमः॥ ॐ सिंहायनमः॥ ॐ कन्यायनमः॥
ॐ तुलायनमः॥ ॐ विद्यायनमः॥ ॐ धनूयनमः॥ ॐ मकरायनमः॥

ॐ कर्मायनमः॥ ॐ मीनायनमः॥ द्वादशराशिस्थानमः॥
ॐ यगियुदायनमः॥ ॐ द्विगियायनमः॥ ॐ त्रिगियायनमः॥
ॐ चतुर्गियायनमः॥ ॐ पञ्चगियायनमः॥ ॐ षडंगायनमः॥ ॐ सप्त
रंगायनमः॥ ॐ अष्टांगायनमः॥ ॐ नवगंगायनमः॥ ॐ दशगंगायनमः॥
ॐ एकादशगंगायनमः॥ ॐ द्वादशगंगायनमः॥ ॐ त्रयोदशगंगायनमः॥
ॐ चतुर्दशगंगायनमः॥ ॐ अमावासिस्थानमः॥ ॐ शुक्लमासिस्थानमः॥

यश्च दशनिधिशानमशाँ सुदूरं शानमशाँ ववादि कवनर्श
नमशाँ अहो नाँ शानमशाँ यकं शानमशाँ येगादि द्वादश
वासिशानमशाँ वसन्तादि षष्ठं शानमशाँ मन्त्रं शानमशाँ
कुंदया यनमशाँ जिवसेनमशाँ जिरवायनमशाँ कवचाय
नमशाँ नगायनमशाँ अष्टायनमशाँ ॥ अनन्ताय ण्डं देह
लयथागमूलधूयदीय रुलने वेश्यादि मुक्त्यासिद्धि वस्तु ॥ ॥ थव

थव वनकामकं गने ॥ ॥ अं अनर्कं कामयं देवः सर्वकामरुल यदी।
अनर्कं जालवृथनः यगयोगाय वद्वर्गी ॥ ३ ॥ वनका कायावति
यसकलर्कं ॥ अं अनर्कं यमि गङ्गामिः ननर्कं वेददा निवा अन-
र्कं गावका राशः मनकायनमास्तुते ॥ ॥ वनकादिव केसक
मुनी ॥ अं अनर्कं ममा वमहासमुदं गि ॥ १६ ॥ वनका द्वावक ॥
कुं मरुदादि उगन्तुर्गुः उ वनान्तिव उ द्दशी धर्मार्थकाममास्तुः

लिलकयेकाययास्यदं॥संसात्रगुह्यवगुहासुसुखंविहवदुःखं
 कृन्निथकलकलाहवशुद्धसत्त्वा॥संक्षेत्रगिरुवनेशमननः
 देवैःवक्षन्निदक्षिणकयेवलणालकनै॥ॐतिथित्वा॥मिऊ
 नयाऊवलाहानसमिसायाखवलाहानसद्धावकै॥युवानव
 नकार्लखनसंलावनकैसोसथुंदावजांदावेनय॥ॐनमो॥मु
 दवदेवायःविष्णुयध्यायवश॥सूगुंयुक्तिप्रसीदयःविष्णु

[illegible]

15

5

शायवदनिलयायमहादयायःसिंहायदेवमिधनायवतु बुद्धा
यावक्केन्द्रविष्णुमृनिवाचलसंमुनायःदेवारुमायववदायनमा
चुनाया॥१॥नागलुहागजयनासनमुयियायःएगहीनहुमसु
कनीलचनारुमायायीनाम्बनायमधुकेटरुनाजनायःरुकिशिया
यववदीयसूदर्शनाय॥२॥नारीसुजातकमलसुवतुर्म्खायःक्री
वाचकार्णवनिर्कननसारुनायानानाविविगुमकटाङ्गदरुषायः

सर्वेश्वरायववदायनमाचुनाया॥३॥विष्णुमृनिवाचलसंमुनायः
वामनायदुल्लोचविन्दुकमलायनलाषनायादेवेन्द्रदानवय
वीधिरथोत्रषायश्रीगणेशनायविजयायनमावनाया॥४॥लाका
यनायशिदम्भयनायःखट्वायनायात्तरुवायनायाधर्मायनाके
रुलायनायःमहाबलाहामदामतास्मि॥५॥अविन्दुमशुकमननः
मशुर्गःनायायलंकावलमादिदेवैः।युगान्कलशर्वयुर्वसुनागर्गः
*य३

गंगासुदेवैश्वर्यययय॥१२॥ अङ्गेतमकं शमनादिमर्थः मरु र्व
यागवक्त्रविदाम्पञ्चावदन्ति दम्भयत्रुर्वसनागर्नः गम्भासुदेवैश्व
र्यययय॥१३॥ विविगुकेयुत्रमहायनिर्हः वल्लोकिमालीकृत
सर्वगर्ण।यीताम्वर्यकावलरुकिदर्वः मालाधर्तकजवमसुयेति
॥१४॥ रुवाङ्गुर्वदविदीवविर्हः यागान्मर्कमाख्यविदावदन्ति।
आदित्यवर्तुज्जिवसुप्रगर्वः पुत्रुं प्रययश्चुतमान्मदुर्त॥१५॥ अन्

कमुलवलायः विष्णुयधवायवानभासदात्मदेवायः अन्का
यनमाऽमुर्त॥१६॥ नमालोकहितार्थयः नमः४यायदुवायवश
नमः४सुसावमात्रायः नमः४सागत्रज्जयिने॥१७॥ अन्कायनममु
र्तुः कुकिमृकिप्रदायवानिभैवानेकदूयायः सुस्तिर्मेदानका
विल्ला॥१८॥ नमाअन्कदूयायः सर्ववसुप्रदायवानानानन्दप्रमा
दायः यत्रमासुसुवृयिल्ला॥१९॥ ॥ अन्ककलशया॥ ॐ अन्का

गथानर्कः कृष्णार्कः ऊनाई नशादिविवाहुविदाममासुवासानन
 केवाननकाकयुकार्मी अवधात्रिगसायदायविन्दो ययलो नैमनसाः
 विविक्तयामि॥ कृमिस्त्रलितया दार्ष्ट्यः कृमियेवावलम्बनी त्वयिजा
 गायवाधार्नीः त्वमेवजबलं दृष्टं॥ नान्यं वदामिनरुजामिनयाश्रयामि
 नान्यं वदामिनशुद्धमिनविक्तयामि॥ प्रकृत्यदीयवयसाम् कृमाद
 यलः श्रीश्रीनिवासपुत्रधारुमदेहि दार्ष्ट्यं॥ कर्मलामनसावायात्

कानान्या गतिर्ममेशत्रकधवलरुगानी दृष्टान्तं यत्रमंश्वयथा ज्ञय
 वाधस रुमानिक्रियने दृष्टिर्निर्ममया दासादमितिमीरु कृत्वा रुम
 स्वयत्रमंश्वयथा ज्ञावा रुर्नन जानामिः न जानामिदिसर्जनी दृष्टः
 जीवायिन जानामिः रुमस्त्रजग दीश्वयथा ज्ञं याया दृष्टिः
 त्यादि॥ अतन्नुगार्त्तनविधेयं गगन्धयुष्यधूयदीयज
 र्वनविधेयं ज्ञाविधानगत्तर्त्तयत्रिष्टुममु॥ नर्वमुत्ताय

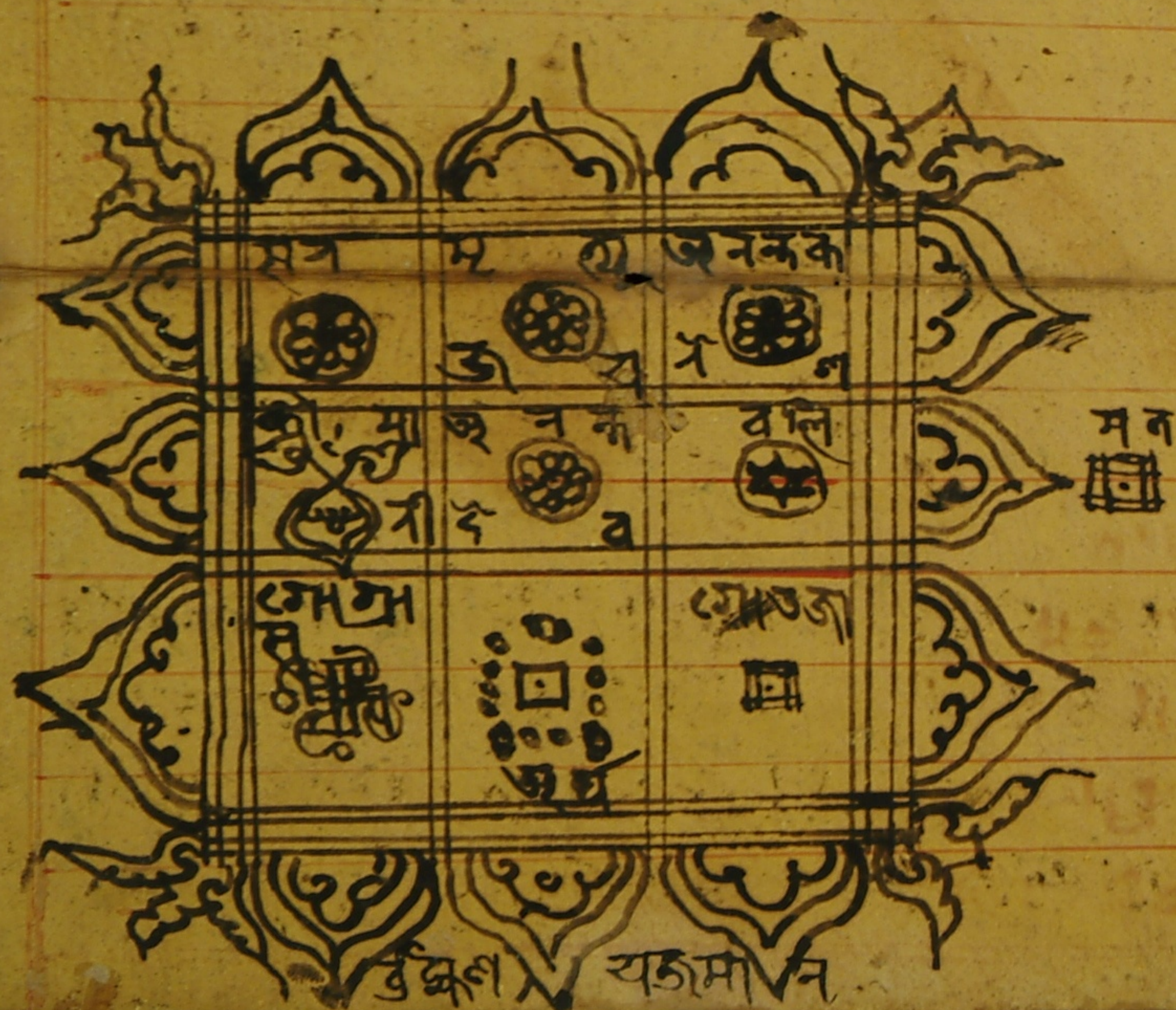
न० ८ मस्तुगिया र्थयित्वा दधु युलमनयुलमं ॥ ॥ मस्तुल
 सवोदस्तान कुवकं ॥ मस्तुलविसरुं ॥ वादातसिया ॥ नासिव
 कं ॥ दवदक्षिणा ॥ वाकलसुजादक्षिणा ॥ अगमन्नादि ॥ ॥
 अर्घयाग्यालं खन अरि कं ॥ वन्दनसिं दूया ॥ आर्चाद ॥ धनम्
 निस्तु ॥ सुखसादि ॥ मरीवि ॥ यकं सुखं ॥ यावनयायकं ॥ वंय
 यूयुलिसुवाय ॥ ॥ ॐ नि अनन्तवुगदिविषि ॥ ॥ ॥

अग० ८ मस्तुगिया ॥ स्तानकर्मर्तु धनकं ॥ दूयाया र्थं वुगदन्तं ॥ व
 नकायाममाल अर्घवियममा वसकती उ र्थं ॥ वाक ॥ यजमा
 नस्य अनन्तवुगदिविषि ॥ वाकलसुजादक्षिणा र्थं धनकं ॥ जा
 नयुगलं रुमीनिभा यदवस्य दक्षिणा यदं दक्षिणा दुस्तेनयुः
 द्वाविमूर्तु नायक या ॥ दवधियकसकस्ये ॥ ॐ सवस्तु वकती
 दूजी सयाद्यदिविषि वस्तु ॥ वज्रमनिमनन्तं ॥ विष्णुलाकी

ॐ नमः शिवाय ॥ वक्राब्ध्यादि देवायः प्रयादियत्रमन्त्रवशानमाः
नमस्तु योगिह गच्छाननमदायहा ॥ ॐ नमि वि स र्जना ॥
न्यासवि काय ॥ सूर्य सादि ॥ द्रुसकी ग या व अरि धे क ॥ कलश
या ली खन ॥ ॐ दे व स्य त्वा ॥ वन्दन ॥ ॐ य द द क ॥ सिं ध ॥ ॐ त्वं उ
वि रु दा ॥ मा द न ॥ ॐ समि द्वा ज्ञं ज वै न रु द व मा ता नी ध न म ल्ग
म धु म त्थ न्वा न ॥ वा जी व दे न्वा जी नं जा न वे दा व वा नी व द्धि

स्तुति यमा स ध र्मा ॥ स यु ल ॥ ॐ इ धि का य्वा ॥ आ गा द्वा द ॥ अ र्ध
रु ल से उ प्र ज सिं ध र्म रु द्वा य ॥ व र्दि दा वा द्वा दि र्वा य ॥ ग
ठ जा ग र ल स या ग ॥ र ग ग्रा स सा या ग ॥ को मा नी रु डा र्वा य ॥
त नी अ र्ध रु ल न य ॥ ना रु ने ॥ ॐ नि रु वि द्वा रु न प्र य
र ल अ न न रु त वि धा न स मा र्क ॥ ॥ १ ॥ ॐ यो मु र्म व न
६०६ कार्ति क शु क अ र्ध मिः वृ थ वा न स न ॥ थ र्क रु या य

धनका॥ उभिर्वगाद्या सधुनन्दन अनन्य युग थवग वा याः
 रुया॥ ॥ शुभममु सर्वदी ॥ १॥ र्गवग ६०० आश्विनिकु वूव
 उदगिर्ग मवायर्क कृष्ण उमानन्द रुम उरुवदिननि र्कः
 द्वादमिर्क कृष्ण कनसि र्माकदिन रुया॥ ॥ ॥



नृसिंहीमश्रुत्वाः सुतयदकमलैः नाभिरुकि नाना
यथा मारिचैः न्यायि यत्र कथने नानुन कायवानिः नृषा
शीरुष लिताः लिखितकथाः सादृशं लोचकल्लुः धृक्ताः
धृक्ताः कथयति सैते नृपतेन (धृष्टकेशः)

श्रीवशादि १० राशतका ५
जुहोहिनायध्यासदासदासस्यदासस्यवदासदासश्रु ॥ श्रीगुरुस